अख़बार के रास्ते
भाषा शिक्षण का अनुभव

अर्चना द्विवेदी

लेखिका ने अख़बार को शिक्षण सामग्री बनाया और उसको लेकर कक्षा में भाषा सीखने-सिखाने का काम किया है। बच्चे समाचार पत्र की समझ रखते हैं ये उनकी बातचीत में उभरकर आता है। वे आगे बच्चों से समाचार पत्र की ख़बरों को लिखने के लिए कहती हैं और बच्चे इसमें जुट जाते हैं।

बच्चों के लिए लेखन को अर्थपूर्ण बनाना कैसे हो सकता है, यह लेख इसकी भी एक झलक देता है। सं.

भूमिका

भाषा को पढ़ना-लिखना सीखना और लिखित रूप में समझना भाषा शिक्षण के आवश्यक कौशल हैं। पढ़ना-लिखना जीवन को समृद्ध बनाने के साथ ही उसे समझने में भी मदद करता है। इस कौशल से हम दुनिया में बदलाव की उम्मीद भी कर सकते हैं क्योंकि ये आपके समझने की क्षमता का विकास भी करता है।

विद्यालय में बच्चों को लिखने व पढ़ने के जितने अधिकाधिक अवसर हम दे पाएँ, उतना बेहतर है। पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में बच्चे भाषा से जुड़े अन्य कौशल, जैसे– अवलोकन करना, सवाल पूछना, कल्पना करना, जीवन में इनकी प्रासंगिकता समझना आदि भी सीखेंगे, और लिखने-पढ़ने के माहौल में इन कौशलों में कुछ बढ़ोतरी कर पाना सबके लिए सम्भव होगा ही।

प्रिंट समृद्ध वातावरण एक प्रकार की ललक उत्पन्न करता है। प्रिंट सामग्री में मौजूद आकर्षक रंग, रूपरेखा, चित्रांकन पाठक को, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, कम-से-कम एक बार सोचने और देखने के लिए मजबूर करते हैं। यह इस माहौल में पहली बार आने वाले छात्रों की रुचि को तो 'एक बार' ट्रिगर करता ही है। यहाँ 'एक बार' के महत्त्व को समझना और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि मेरी कक्षा के ज़्यादातर बच्चे ऐसी पृष्ठभूमि से आते हैं जहाँ उन्हें छपी हुई सामग्री का कोई ख़ास एक्सपोज़र नहीं मिल पाता है।

अख़बार से सीखना

छात्रों को भाषा सिखाने के लिए अख़बार भी एक अच्छी सामग्री है, ऐसा कहा जा सकता है। अपने अनुभवों में मैंने पाया है। कि प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण की दृष्टि से अख़बारों का प्रयोग सीमित होता है। जहाँ कहीं अख़बारों का प्रयोग होता भी है, वहाँ यह सूचना प्राप्त करने या सामान्य और सतही जानकारी तक ही सीमित है।

मैंने अख़बार को लेकर कक्षा 3 के बच्चों के साथ काम किया और मेरे अनुभव काफ़ी रोचक रहे। इस लेख में मैंने इन्हीं अनुभवों को रखा है।

कक्षा की प्रक्रिया और अनुभव

लॉकडाउन के पश्चात जब काम शुरू किया तब बच्चों के सीखने के स्तर को देखते हुए

कक्षा 3 के बच्चों को दो समूहों में विभाजित किया गया था। एक समूह में वे बच्चे थे जो कोविड समय के दौरान भी स्कूल व समुदाय की कक्षाओं से लगातार जुड़े रहे थे जबकि दूसरा समूह नए बच्चों का था और वे कुछ महीनों से ही हमारे साथ थे। दोनों समूहों के साथ काम करने की रूपरेखा अलग-अलग बनाई गई और इनके साथ की जाने वाली कुछ गतिविधियाँ भी अलग थीं।

चित्र : प्रशान्त सोनी

एकलव्य द्वारा प्रकाशित प्रारम्भिक साक्षरता पर द्विभाषी पुस्तकों को पढ़ते हुए मैंने महसूस किया था कि ये पुस्तकें पठन कौशल की अलग-अलग दक्षता रखने वाले छात्रों के लिए प्रासंगिक हैं। इसी शृंखला की एक पुस्तक *अख़बार* थी। मेरी योजना ऐसी ही किताबों के इर्द-गिर्द विचारों और संरचित पठन-पाठन का निर्माण करना थी।

अख़बार से जुड़े अनुभव

अपनी योजना को आगे बढ़ाते हुए मैंने छात्रों से निम्नलिखित बातचीत की :

1. हम सभी कवर पेज से इस किताब को पढ़ना शुरू करेंगे।

2. सबसे पहले कवर पेज को देखो और बताओ कि इस पेज में क्या-क्या दिख रहा है?

लगभग सभी छात्रों ने समवेत स्वर में उत्तर दिया कि एक आदमी अख़बार पढ़ रहा है। बातचीत को आगे बढ़ाते हुए मैंने उनसे पूछा :

1. क्या आप जानते हो अख़बार क्या होता है?

2. क्या आपने कोई अख़बार देखा है?

सभी ने सकारात्मक उत्तर दिया और उत्साह के साथ सिर भी हिलाया। ऐसे प्रश्न काफ़ी सामान्य लग सकते हैं लेकिन ये काफ़ी अहम हैं। ये बच्चों के अवलोकन और समझ को जगह देते हैं और उनका उत्साहवर्धन करते हैं क्योंकि इस तरह के प्रश्नों से वे यह समझ पाते हैं कि कक्षा की बातचीत उनके रोज़मर्रा अनुभवों से जुड़ी हुई है।

ख़ैर... इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने अपना अगला सवाल पूछा कि आप सभी ने अख़बार देखा है तो आप उसमें छपी चीज़ों के बारे में क्या जानते हैं?

बच्चों ने मेरे सवाल का जवाब देना शुरू कर दिया। मैंने उनसे कहा कि मैं एक-एक करके आपके जवाब सुनूँगी। मुझे आपके हाथ देखने दो और उसके बाद मैं आपका नाम पुकारूँगी और तब आप जवाब दे सकते हैं। इस रणनीति के पीछे मक़सद था कि जो बच्चे अभी सोच नहीं रहे हैं उन्हें सोचने का मौक़ा मिले, साथ ही निर्देशों को स्पष्ट रूप से समझकर वे भी अपने जवाब तय कर सकें।

लगभग सभी बच्चों ने इस प्रश्न का उत्तर दिया। कई बच्चों ने 3 या 4 बार जवाब दिया। मैं उनके उत्तर बोर्ड पर लिख रही थी और आए जवाबों को अलग-अलग शीर्षक और उपशीर्षकों में बाँटती जा रही थी। मैंने समाचारों

को उनकी प्रकृति के अनुसार वर्गीकृत करने का प्रयास किया। वर्गीकरण एक महत्त्वपूर्ण कौशल है जिसे विषय सामग्री के अनुरूप श्रेणियाँ बनाते हुए इस्तेमाल किया जा सकता है। कुछ ही देर में, मेरे पैटर्न को पकड़ते हुए एक छात्र ने अन्य छात्रों की प्रतिक्रियाओं को भी लिखी गई श्रेणियों में वर्गीकृत किया। कुछ ख़बरों के लिए बच्चे ख़ुद ही बोलने लगे कि यह पहले से ही लिखा हुआ है। जब मैं पूछती कहाँ, तो वह सब मिलकर मुझे उसकी जगह बताते। यह उनके धीरे-धीरे शब्दों और वर्गीकरण के पैटर्न से परिचित होने का संकेत था।

समाचार पत्रों में बच्चों ने जिन समाचारों का उल्लेख किया, वे थे :

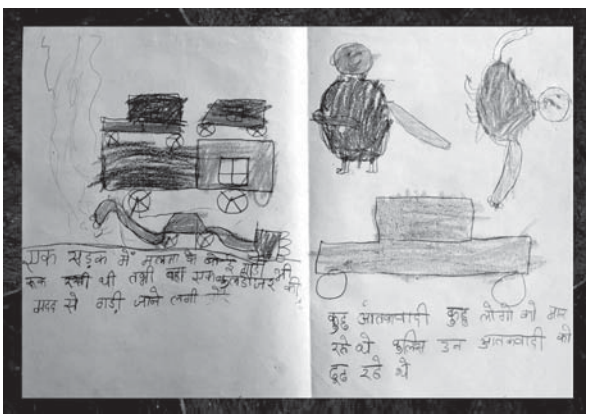

सामान्य जानकारी, जनता के बारे में, प्रधानमंत्री के बारे में, लोगों की फ़ोटो, सूचना, चोरी के बारे में ख़बरें, मृत व्यक्तियों की फ़ोटो, यात्रा की ख़बर, जंग जीतने की ख़बरें, फ़ौजी और लोगों के मरने की ख़बरें, गाड़ी गिरने की ख़बरें, घर गिरने की ख़बर, बाढ़, तूफ़ान, भूस्खलन, खेल और प्रतियोगिता की ख़बरें, नौकरी लगने वालों की फ़ोटो छपती है, मंत्रियों को माला पहनाने की फ़ोटो, स्कूल जब प्रथम आता है उसकी ख़बर, फ़िल्म की ख़बर, बॉलीवुड की ख़बरें, आदि।

इसके बाद हमने किताब पढ़ी और तस्वीरों के साथ दिए गए शब्दों को भी। मैंने पढ़े गए पृष्ठों से कुछ एक-पंक्ति वाले प्रश्न भी पूछे। बाद में अपनी योजना को आगे बढ़ाते हुए मैं कक्षा में अख़बार लाई और छात्रों से अख़बार के पन्ने पलटने व उसे देखने के लिए कहा। उन्होंने अख़बार को देख, पन्ने पलटकर, कुछ सरसरी तौर पर पढ़कर उसकी जगह पर रख दिया। अब मैंने उन्हें दोतरफ़ा कोरा काग़ज़ दिया और उन्हें अपना अख़बार बनाने को कहा। इस अख़बार में आप अपनी ख़बरें लिखें और उन्हें दर्शाने के लिए चित्र भी बनाएँ। छात्रों ने पूछा कि वह अपने अख़बार को क्या नाम दें। वहीं एक बच्चे ने पूछा कि क्या हम इसे अपना नाम दे सकते हैं, मैंने हामी भर दी।

जब उनका यह कार्य समाप्त हो गया तो मैंने उनके अख़बारों को देखा। पहले तो मुझे यह समझ नहीं आया कि उन्होंने अपने अख़बार में बॉक्स क्यों बनाए, बाद में एहसास हुआ कि मैंने उन्हें चित्र भी बनाने के लिए कहा था और समाचार लिखने के लिए भी। बच्चों ने अपने चित्र को बॉक्स में रखा जैसा कि अख़बारों में बॉक्स में पिक्चर दी होती है, उन्होंने उसी पैटर्न का अनुसरण किया। यह उनके गहन अवलोकन और निष्पादन को दिखाता है।

चूँकि वे लिखने में चुनौतियों का सामना कर रहे थे, इसलिए जिन शब्दों को लिखने में उन्हें मुश्किल हो रही थी मैं उन्हें बोर्ड पर लिख रही थी क्योंकि लिखे जाने वाले शब्द उनके अपने शब्द थे, इसलिए वे पहचानने की कोशिश कर रहे थे और आसानी से लिख रहे थे। इस अभ्यास का यह लाभ होता है कि वे नए शब्दों को भी बोलने व लिखने की कोशिश करते हैं। मैंने यह भी पाया कि इस प्रक्रिया ने उनमें कुछ नया लिखने का विश्वास भी दिया। इससे उनका वर्तनी वर्धन हुआ। यह अन्य बच्चों को अपने वाक्यों में भी नए शब्दों का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेगा। वे किताब भी देख सकते हैं और उससे भी वर्तनी लिख सकते हैं।

यह जानने के लिए कि अन्य लोगों ने क्या लिखा है, सभी ने अपने-अपने समाचार पत्र को ज़ोर से पढ़ा। बच्चे अपने साथियों द्वारा बनाए समाचार पत्रों को देखने और उनमें लिखी ख़बरों को पढ़ने के लिए उत्सुक थे। सभी ने अपना समाचार पत्र लेखन और चित्र अन्य छात्रों को दिखाए।

कुछ अवलोकन

मैंने बच्चों के काम को पढ़ा और उनका विश्लेषण किया। ये इसलिए भी ज़रूरी था क्योंकि ये बच्चे स्कूल में नए थे और इन बच्चों द्वारा किए गए काम को जानकर, समझकर आगे काम किया जा सकता है, इसकी योजना बनाई जा सकती है। इस हिस्से में बच्चों द्वारा लिखी गई ख़बरों के नमूने और उनका विश्लेषण है :

रवीश के अख़बार की ख़बर : *नदी की खबर कल नदी आने वाली है, गहने की खबर आज गहने की चोरी हुई थी, एक लड़की की खबर है एक लड़की डॉक्टर बनी थी, एक तोता की खबर है एक बार एक गाँव में बोलने वाला तोता था, एक छोटा बच्चा किडनैप हुआ गया था, भुतिया घर में एक बूढ़ा रहता था, जादुई पेड़ रहता था जो बीमार पड़ता था वहाँ उसके पेड़ के पास जाता था, प्यारा कुत्ता की खबर है एक कुत्ता को किडनैप किया गया था, एक हाथी की खबर है एक हाथी गाँव में आया था।*

विश्लेषण : रवीश ने हर हेडलाइन के साथ उससे जुड़ी तस्वीर खींची। डॉक्टर के मामले में, उसने लड़की को कुछ विशेष प्रकार के सिर के साथ बनाया। यह स्नातक समारोह में छात्र के कपड़े जैसा दिखता है और मुझे लगता है कि वह लड़की को डॉक्टर की डिग्री के साथ दिखाना चाहता है। उसके चित्रों में सकारात्मकता के साथ उसके ख़ुशमिज़ाज स्वभाव की झलक दिखती है।

सुधांशु के अख़बार की ख़बर : *एक बस खाई में गिर गई, पानी की लहर में एक घर खाई में गिर गया टूटने की वजह से बह गया और खो लोग बह गए और जब पुलिस ने उनको जब बेहके जब देख तो पुलिस ने एंबुलेंस बुलाई गई और उसे ले गया और उनको अस्पताल में भर्ती की गया। एक सड़क में मलमा के कोई गाड़ी भी रुक रखी थी तभी वहाँ एक बुलडोज़र की मदद से गाड़ी जाने लगी।*

चित्र : प्रशान्त सोनी

विश्लेषण : फिर से यह ख़बर स्थानीय परिवेश के सम्बन्ध में थी जहाँ भूस्खलन बहुत आम है, और जेसीबी द्वारा मार्ग को साफ़ किया जाता है। जेसीबी का चित्रांकन व आयाम उपयुक्त बनाया गया है। यह ड्राइंग करते समय चीज़ों की समझ को दर्शाता है। यह एक जटिल चित्र था।

कुछ आतंकवादी कुछ लोगों को मार रहे थे पुलिस उन आतंकवादियों को ढूँढ़ रही थी। मृत व्यक्ति का चित्रांकन देखते हैं तो उसका

कोण बदला हुआ है, वह क्षैतिज रूप से लेटा हुआ है। आतंकवादी का चित्र भी वैसा ही था जैसा अमूमन टीवी में दिखता है। उसके हाथ की मुद्राएँ तो बनाईं, लेकिन बन्दूक नहीं दिखाई गई थी। इस बच्चे ने पुलिस की गाड़ी भी बनाई।

सुधांशु का अख़बार बिलकुल उन्हीं तरह की ख़बरों से भरा था जैसी हम अख़बारों में देखते या पढ़ते हैं। ये इस बात को दर्शाता है कि आसपास नकारात्मक प्रभाव काफ़ी ज़्यादा है।

हालाँकि चित्र काफ़ी अच्छे बने थे और धीरे-धीरे वह अच्छा चित्रकार बने, ऐसा हो सकता है। मुझे यह भी लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि वह मन से उदास हो।

मैथली के अख़बार की ख़बर : *एक कोरोना आ गया है, तुम बचो कोरोना वायरस फैल गया है, एक लड़का ट्रोफी जीत गया है, एक आदमी की मौत हो गई है, एक लड़का साइकिल में गिर गया है। एक पिल्ले को पकड़ रहा है, एक चिड़िया की मौत हो गई है। एक लड़की गाड़ी के नीचे आ गई है। एक फूल सूख गया है। भारत के झण्डे जीत गए हैं टीवी में न्यूज़ पेपर दिख रही है। एक चील उड़ रही है। एक चूजे रवीना के बच्चे तीन हैं।*

विश्लेषण : उसकी ख़बरों में विविधता है और विचार भी अलग थे। उसने सिर्फ़ एक ही शब्द मुझसे लिखने के लिए कहा और वह था कोरोना। और सबसे पहली ख़बर भी कोरोना को लेकर थी। उसका समाचार पैटर्न बॉक्स के भीतर बॉक्स था। उसने एक बड़ा बॉक्स बनाया और फिर उस ख़बर को बाहर निकालने के लिए बड़े बॉक्स में एक छोटा-सा बॉक्स बनाया। वह ख़ुद पढ़ती है और लिखित रूप में भी कम समर्थन लेती है। यह उसके अख़बार की वर्तनी से स्पष्ट है कि चीज़ें ख़ुद ही करें। अगर उसके चित्रों को देखें तो चित्रों को विभिन्न कोणों से बनाया गया था जो सामान्यतः इस उम्र के बच्चों में कम ही दिखता है और शायद ऐसी कल्पना करना व उसे काग़ज़ पर उकेरना उच्च स्तर का कौशल है।

सुरेश के अख़बार की ख़बर : *मोदी जनता के बारे में बोल रहा है, एक लड़का हवाई जहाज में जा रहा है, एक लड़का बह गया है, मर गया है न्यूज़ गाड़ी पेपर पर छपी है, कबड्डी में खेल के हैं, लड़का बात कर रहे हैं।*

विश्लेषण : उसके व्यक्तित्व के अनुसार उनका कार्य भी बहुत सरलता के साथ स्पष्टता वाला था। स्पष्ट रूप से चित्रों को दिखाते हुए उसने पूर्ण वाक्यों का उपयोग किया।

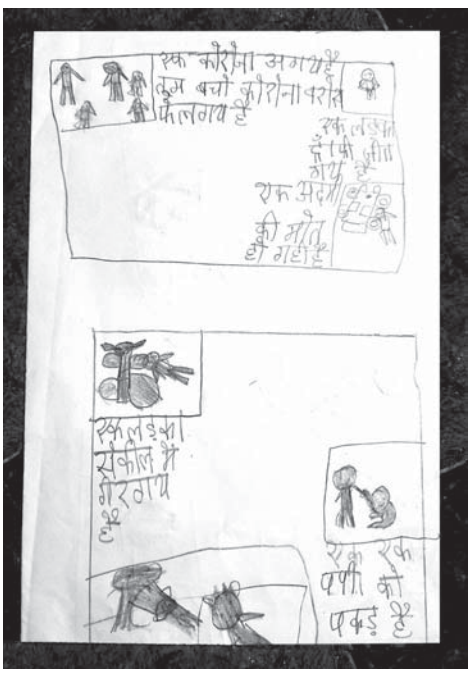

उसने एक मृत शरीर का चित्र बनाया, उसी मुद्रा में जैसे शव रखा गया था। एक सफ़ेद चादर और माला को एक ही रंग से दिखाया गया था, जो मेरे लिए बहुत विचारणीय था। जाने-अनजाने में अपने अख़बार में उसने केवल लड़कों का उल्लेख किया, शिक्षक के रूप में हमें उसमें यह विचार लाने की आवश्यकता है कि दोनों जेंडर हमारी बातचीत का हिस्सा होना चाहिए। यह भी चिन्तनीय है कि अख़बारों

में महिलाओं का उल्लेख कम किया जाता है और अपने परिवेश में हम दूसरे जेंडर को उतनी महत्ता देते भी हैं या नहीं?

गौरव के अख़बार की ख़बर : *एक कार के ऊपर पत्थर गिर गया तब उस गाड़ी का कचूमर बन गया, दो फौजी की मौत, एक मोदी पर माला पड़ी, एक साइकिल फिसल गई, एक बच्चे की साइकिल टूट गई मुझे दुख हुआ, एक लड़की खुश हुई थी क्योंकि उसका भाई वॉलीबॉल में फर्स्ट आया था, एक घोड़े की मौत, 10 फौजी की बर्फ़ में मौत, एक कुत्ता मर गया, एक लड़का रो रहा है, एक लड़का उदास है, एक साँप को नेवला ने काट दिया।*

विश्लेषण : गौरव को पढ़ने-लिखने में कोई दिक़्क़त नहीं है। उसका पैटर्न बॉक्स के अन्दर तस्वीरें रखना और बाहर लिखना था। उसने बहुत कम वर्तनी की ग़लतियाँ कीं और पूर्ण वाक्य बनाए, जब भी आवश्यकता हुई वर्तनी पूछी। एक बार फिर बहुत सारी दुखद और मौत की ख़बर पढ़ने को मिलीं।

चित्र : प्रशान्त सोनी

सुमित के अख़बार की ख़बर : *20 फौजी की बर्फ़ में मौत हो गई, एक साइकिल वाला को उसके ऊपर एक पत्थर पड़ गया उसके साइकिल का कचूमर बन गया, एक बूढ़ा ट्रक के नीचे आ गया, एक आदमी ने दारू में अपने घर में जला दिया, एक आदमी ने नया घर बनवाया, एक अमीर आदमी ने पाँच सितारा होटल बनवाया, एक आदमी ने एक स्कूल खोला, एक आदमी ने एक कार बनाया, एक आदमी ने एक बन्दूक बनाया, एक आदमी ने एक टेंट बनाया।*

विश्लेषण : मैं इन सभी बातों को वहाँ के सन्दर्भ से जोड़ पा रही थी। शराब की बात से उसके प्रभाव को बच्चे के जीवन में भी समझ पा रही थी, उसके अन्दर इस बात की पूरी समझ थी कि शराब क्या-क्या करा सकती है।

कृष्णा के अख़बार की ख़बर : *चार लड़के कार लेकर जा रहे थे एक चोर लड़के वेगन से मारने लगा तभी वो खाई में गिर गया उन चार लड़कों की तस्वीर समीर कुमार उनका घर देहरादून पवन कुमार का घर इंडिया सुनील उनका घर नेपाल सीबब घर जुगोड़ो, एक लड़का रास्ते से जा रहा था एक बस ने उस लड़के को ठोक दिया तभी उसकी मौत हो गई उस लड़के की तस्वीर नाम देवराम है उस बस वाले की तस्वीर, एक बस रास्ते में जा रही थी तब बस के सामने एक घर आ गया उस घर में कोई नहीं था, एक ट्रक रास्ते से जा रहा था तभी एक बड़े बड़े पत्थर आए तब उसकी मौत नाम केरब।*

विश्लेषण : वह शान्त है, कम बात करने वाला है। हालाँकि पूछे जाने पर प्रतिक्रिया देता है और लिखना जानता था। उसने कोई वर्तनी नहीं पूछी। कृष्णा वही छात्र था जिसने उल्लेख किया कि मरने के बाद लोगों की तस्वीरें भी अख़बार में आती हैं। इसे उसने अपने अख़बार में बनाया है। ऐसा नहीं था कि पहले कक्षा में ख़बरों के बारे में चर्चा नहीं हुई परन्तु इसके बावजूद

उसने उन्हीं ख़बरों को जगह दी जिनका प्रभाव उसपर ज़्यादा था।

माधव के अख़बार की ख़बर : *आज चोर आया और चोरी कर गया, आज फौजी मारा, आज जहाज लड़ते लड़ते धरती पर गिरा, और बाढ़ आई है वो बाढ़ में डूब गई, दो मारो ट्रॉफी की लड़ाई, एक साइकिल मौत हो गई, एक फौजी की मौत हो गया, एक चिड़िया की मौत, एक पुलिस की मौत, एक लड़की के ट्रैक्टर के नीचे, एक बूढ़ा ट्रैक्टर के नीचे आ गया, एक नाव झील में पड़ी है, एक बूढ़ा दारू पीके सड़क पर चल रहा है उसका एक्सीडेंट, एक बूढ़ा को मुज लगया, एक लड़का के घर पर आग लगी, एक चोर ने अन्दर घर में चोरी एक बूढ़े की मौत हो गई।*

विश्लेषण : माधव के ध्यान का मुद्दा, यह बात उसके कार्य में भी दिखाई दे रही थी जिसमें चित्रों और समाचार से कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पा रहा था, अन्य ख़बरों की तरह इसमें भी एक समान स्वरूप देखने को मिल रहा है।

समीक्षा के अख़बार की ख़बर : *जब बस गिरती है तब अखबार में छपती है, जब लड़ाई होती है तब अखबार में छपता है, जब बिल्ली गिरती है तब अखबार में छपता है, जब घर डूबता है तो अखबार में छपता है, जब मरते हैं तब अखबार में छपता है, जब पत्थर गिरता है तब अखबार में छपता है, जब टीवी नई आती है तब अखबार में छपते हैं, जब घर टूटता है तब अखबार में छपता है, जब कोई स्कूल में जीते हैं तब अखबार में छपते हैं, जब पहाड़ टूटते हैं तब अखबार में छपते हैं, जब वर्तने आते हैं तब अखबार में छपते हैं।*

विश्लेषण : समीक्षा एक मुस्कुराती हुई लड़की है, जो अपने स्तर पर पूरी कोशिश करती है। उसकी ख़बरों में कुछ शब्दों की अधिकता है जो दर्शाता है कि वह लिखना तो चाहती है परन्तु लिखने में परेशानी के कारण कुछ जाने हुए शब्दों के उपयोग तक सीमित है।

सूरज के अख़बार की ख़बर : *एक रोबोट ने मार कर एक चोर को मार पांच, एक गाड़ी गिरी पानी में बस के बुरे हाल हो गया, जिप्सी गिरी पहाड़ से जिप्सी टूटी और आदमी की लाश मिली कल सबको, लाल कार जीती मिला 5,00,00,000 का चैक।*

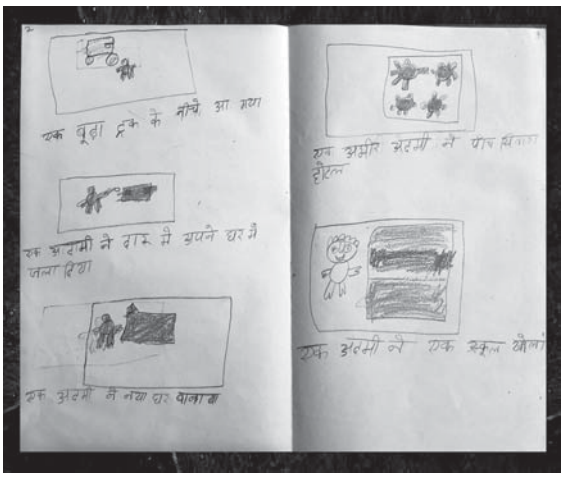

विश्लेषण : मुझे कई बार ऐसा लगा कि सूरज किसी प्रकार के मनोवैज्ञानिक दबाव का सामना कर रहा है, यह उसके काम से स्पष्ट है। भले ही वो कक्षा में उत्तर देता हो, उसके विचार से यह स्पष्ट हो जाता है। उसके रंगों की पसन्द, ड्राइंग पैटर्न, उसका लेखन हमेशा कक्षा में इसका प्रतिबिम्ब है। इस कार्य में उसने चित्रों में कुछ चमकीले रंगों का प्रयोग किया है, अन्यथा वो हमेशा dull या अधिक काले रंग पसन्द करता है।

सिया के अख़बार की ख़बर : *दो गाड़ी के ठोकर, दो बच्चे हाथ पकड़ रहे, पेड़ पर सेब उग रहे हैं, तितली उड़ रही है, फूल*

उग रहे हैं, आइस क्रीम, नदी बह रही है,
बक्सा, डिब्बा, हाउस, तितली उड़ रही है।

विश्लेषण : सिया के लिए लेखन अधिक चुनौतीपूर्ण है। वह थोड़ी उलझन में रहती है और निर्देशों को एक साथ समझना उसके लिए मुश्किल होता है, फिर भी उसने मेरी अपेक्षा के अनुरूप काम किया। उसने मुझसे पूछा कि क्या करना है, मैंने समझाया कि आप अख़बार में जो ख़बरें देखती हैं आपको उसका चित्र बनाना है और उसके बारे में लिखना है। बाद में मैंने कहा कि आपको वाक्य लिखने की ज़रूरत है, आप केवल शब्द ही लिख सकती हैं। जब उसने चित्र बनाया तो मैंने कहा कि अब जो चित्र बनाया उसके लिए शब्द लिखो। हालाँकि, वह भी पूरे वाक्य को लिखना चाहती है जैसा कि अन्य कर रहे थे, इसलिए शुरू में मुझे बोर्ड पर केवल शब्द लिखने के लिए कहा। बाद में अपने चित्र के अनुसार उन शब्दों के साथ उसने वाक्य बनाया। एक और बात यह थी कि जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा था, मैंने उसे केवल दो पृष्ठ समाप्त करने के लिए कहा। फिर भी जब उसने दो पृष्ठों को रंग दिया और अतिरिक्त समय बच गया, तो उसने कहा कि वह तीसरे पृष्ठ में भी काम करना चाहती है। उसने नदी बनाई और उसके बारे में लिखा। हालाँकि उसका कार्य दिए गए अनुसार नहीं था, फिर भी उसने बिना किसी दबाव के उसे पूरा किया।

चित्र : प्रशान्त सोनी

जब वह अपना काम कर रही थी, मैंने उसके क़रीब आने की कोशिश की, मैं उसके काम के लिए उसकी सराहना करना चाहता थी। मैंने अपना हाथ उसके चेहरे के क़रीब रखा, वह डर गई और अपना चेहरा पीछे की ओर धकेल दिया। उसने सोचा कि मैं उसे मारूँगी। मैंने उससे कहा कि उसे डरने की ज़रूरत नहीं है और वह जो चाहे या जब चाहे पूछ सकती है, उसने अपना सिर हिलाया और मुस्कुराने लगी।

इन अनुभवों पर चिन्तन

जब मैंने कक्षा में इस योजना को कार्यान्वित करने हेतु प्रवेश किया तो मेरा विचार भाषा, अक्षर, वाक्य और लेखन सीखने के इर्द-गिर्द ही घूम रहा था। यह मेरी कल्पना से परे था कि मैं उनके विचारों में इतनी भिन्नता प्राप्त करूँगी और उनकी ख़बरें इस तरह की होंगी।

इस गतिविधि की रूपरेखा बनाते हुए मैंने कुछ मापदण्ड रखे थे जैसे– सभी छात्रों का पुस्तक पढ़ने में शामिल होना, सक्रिय भागीदारी, जो महसूस किया है उस भावना को अपने लिए समझना और व्यक्त करना, आदि। गतिविधि के अन्त में यदि बच्चों के कार्य का अवलोकन करूँ तो सभी छात्र इन स्तरों पर काम कर पाए। सबकी क्षमता अलग थी परन्तु इस कार्य ने सभी को सार्थक रूप से शामिल किया। साथ ही, उन्होंने अपने काम में उन उच्च स्तर की रणनीतियों का उपयोग करके उसे अख़बार के रूप में पेश किया जो उनके इस कार्य से संज्ञानात्मक जुड़ाव को दिखाता है।

यदि इस गतिविधि से छात्रों के कार्यों को समझा जाए तो यह दर्शाता है कि अख़बारों के प्रति उनकी एक समझ है और उन्हें पता है कि समाचार कैसे बनते हैं। उनके अख़बारों की हेडलाइन पढ़कर ये भी समझ आता है कि हेडलाइन का अर्थ है कुछ सार्थक शब्द जो पाठक को पढ़ने के लिए आकर्षित करें,

और साथ ही कुछ चित्रांकन भी। वे बहुत सारे विचारों को परिभाषित करने के लिए उपयुक्त शब्दों का चयन करना सीखते हैं। अपने अख़बार में हेडलाइन का इस्तेमाल करना दर्शाता है कि वह सुर्ख़ियों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा की अभिव्यक्ति समझ गए और अपने अख़बारों की सुर्खियों के लिए भी उन्होंने संक्षिप्त आकर्षक शब्दों का चयन करने की कोशिश की।

इस गतिविधि ने छात्रों के सांस्कृतिक और भाषाई पहलुओं और उनपर उनकी आपसी बातचीत को भी कक्षा में लाया। उनके लेख समाचार सामग्री के बारे में उनकी सामाजिक सोच का विश्लेषण थे।

यदि हम इस गतिविधि को एक छात्र के सीखने के दृष्टिकोण से देखें तो महसूस करेंगे कि बातचीत के साथ-साथ अपना अख़बार बनाने में भी वे आसपास के अन्य दृष्टिकोणों के प्रति संवेदनशील थे और अपनी दुनिया से उसे जोड़ने की कोशिश भी की। हालाँकि वैश्विक स्तर या अन्य आयामों से उनका जुड़ाव न के बराबर था जो बताता है कि शिक्षक को शायद इस क्षेत्र में काम करने की ज़रूरत है।

उनके अख़बार को पढ़ते हुए मैंने पाया कि वे सभी मौत की ख़बरों के सम्पर्क में हैं, और इसका उनके चित्रांकन के साथ-साथ लेखन पर भी प्रभाव दिखा। ऐसा लगता है कि सार्वजनिक समाचार पत्र ने अपना उद्देश्य खो दिया है और यह केवल बुरी ख़बरों का भण्डार हैं।

जब मैंने उनसे अपने अख़बार की ख़बरें पढ़ने को कहा तो उनमें ज़्यादातर ख़बरें सेना के जवानों की मौत, भूस्खलन से मौत, दुर्घटना के कारण मौत के बारे में थीं। इससे पता चलता है कि कम उम्र में वे इस कठोर वास्तविकता से इतने अधिक परिचित हैं क्योंकि यह स्कूल उस स्थान से जुड़ा हुआ है, जहाँ दुर्घटनाएँ आम हैं और कई परिवार में लोग सेना में भर्ती होते हैं।

यह गतिविधि कहीं-न-कहीं बच्चों के लिखित व मौखिक कौशल का विकास करने के साथ ही शिक्षक को बच्चे के अन्दर चल रहे उन विचारों से भी अवगत कराती है जिन्हें उसने कभी सोचा नहीं था। कक्षा के बाद जब लिखने के लिए मैं इनके काम को पढ़ रही थी तो मैं उनके विचारों और व्यक्तित्व का भी अध्ययन कर रही थी। मेरी कोशिश यह भी थी कि इनके कार्यों से और क्या जान सकती हूँ जो मुझे इनकी पढ़ने-लिखने की क्षमताओं को बेहतर बनाने में मदद करे।

गतिविधि के माध्यम से बच्चों के व्यवहार सम्बन्धी मुद्दों, और विभिन्न पृष्ठभूमि से आ रहे बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास को भी समझने में मदद मिलती है।

भविष्य की कक्षाओं में छात्रों को समाचार पत्रों के कुछ और पहलुओं से अवगत कराने का प्रयास किया जाएगा, अर्थात, समाचार पत्र के लिए क्या-क्या लिख सकते हैं, और लेखन की विविधता और अलग-अलग तरह के टैक्स्ट लिखने के लिए क्या-क्या करना होगा आदि।

लेख में दिए गए सभी बच्चों के नाम काल्पनिक हैं।

अर्चना द्विवेदी ने साल 2013 से कई स्कूलों में अध्यापन कार्य किया है, वे पिछले 4 सालों से अज़ीम प्रेमजी स्कूल में पर्यावरण अध्ययन और विज्ञान पढ़ा रही हैं। फ़िलहाल अज़ीम प्रेमजी स्कूल उत्तरकाशी में शिक्षण कार्य कर रही हैं। प्रकृति में विचरण करने और वहाँ से तरह-तरह के नमूने जुटाने में उनकी विशेष दिलचस्पी है।

सम्पर्क : archana.dwivedi@azimpremjifoundation.org